INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

संयुक्त परिवार पर वैश्वीकरण एवं आधुनिकीकरण का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

(Impact of Globalization and Modernization on Joint Family: A Sociological Study)

डॉ. सुघर सिंह राजपूत

असिस्टेंट प्रोफेसर,

पी. जी. कॉलेज, मलिकपुरा,

गाजीपूर (उत्तर प्रदेश, भारत)

E-mail: sughar83@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/05.2026-41118568/IRJHIS2605013

शोध सार :

प्रस्तुत शोध पत्र में संयुक्त परिवार पर वैश्वीकरण, आधुनीकीकरण, पश्चिमीकरण एवं संस्कृतिकरण के प्रभाव का समाजशास्त्रीय अध्ययन किया गया है। हिन्दू सामाजिक संरचना में प्राचीन काल से ही संयुक्त परिवार प्रणाली ने समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संयुक्त परिवार प्रणाली हिन्दू समाज की आधारशिला रही है। आधुनिक प्रगति एवं विकास ने संयुक्त परिवार की संरचना को प्रभावित किया है। वैश्वीकरण एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है, जिसने विज्ञान प्रौद्योगिकी संचार, एवं बाजार प्रणाली को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। समाज में नये–नये रोजगार के अवसरों का सृजन हुआ, जिसके परिणाम स्वरूप पलायन बढ़ा साथ ही संयुक्त परिवारों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। इसी प्रकार पश्चिमीकरण, आधुनीकीकरण एवं संस्कृतिकरण जैसी प्रक्रियाओं ने जहाँ समाज को विकास की राह दिखाई तो वहीं सोचने समझने, सीखने, खाने–पीने के तौर तरीकों में बदलाव भी किया है। पश्चिमीकरण की प्रक्रिया से भारतीय समाज में अनेक परिवर्तन घटित होने लगे थे। शिक्षा एवं रोजगार के प्रति लोगों में जागरुकता बढ़ने लगी थी। इस संस्कृति से समाज में व्यक्तिवादी विचारधारा पनपने लगी थी। संयुक्त परिवारों के सम्बन्धों में उदासीनता बढ़ने लगी, साथ ही पारिवारिक तनाव भी बढ़ने लगे। इससे संयुक्त परिवारों में विखण्डन होने लगा तथा एकल परिवारों के प्रति लोगों का रुझान बढ़ने लगा। वर्तमान समय में यह प्रक्रिया शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में तीव्र गति के बढ़ रही है। आज के युवा संयुक्त परिवार की उपेक्षा कर रहे हैं और एकल परिवारों में रहना पसन्द कर रहे हैं।

मुख्य शब्द : *संयुक्त परिवार, वैश्वीकरण, पश्चिमीकरण, संस्कृतिकरण, आधुनिकीकरण, संरचना, विखण्डन, प्रभाव।*

प्रस्तावना :

हिन्दू सामाजिक संरचना में प्राचीन काल से ही संयुक्त परिवार प्रणाली विद्यमान रही है। हिन्दू धर्म के साथ–साथ और भी धर्मों में संयुक्त परिवार प्रणाली पाई जाती है। संयुक्त परिवार प्रणाली हिन्दू समाज की आधारशिला मानी जाती है। समाज के विकास में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परिवार ही समाज की सबसे छोटी इकाई है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व, सामाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिवार एक सार्वभौमिक प्रणाली है जो किसी न किसी स्वरूप में सभी समाजों में पाया जाता है। भारत में परिवार का शास्त्रीय स्वरूप संयुक्त परिवार रहा है। भारत में धर्म, दर्शन, वर्णव्यवस्था, आश्रम व्यवस्था एवं जति–प्रथा आदि समाज व्यवस्था के प्रमुख अंग है। इन सभी के संचालन की परिवार एक महत्वपूर्ण संस्था है। हिन्दुओं में परिवार एवं विवाह को धर्म का एक अंग माना गया है। हिन्दू समाज की इकाई व्यक्ति न होकर संयुक्त परिवार को माना जाता है।

आधुनिक प्रगति एवं परिवर्तनों ने न केवल सामाजिक संस्थाओं को परिवर्तित किया है, बल्कि संयुक्त परिवार को भी प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों का संयुक्त परिवार प्रणाली पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। संयुक्त परिवारों को चलाने वाली व्यवस्था में उदासीनता बढ़ने लगी। इससे संयुक्त परिवारों में विखण्डन बढ़ने लगा। आधुनिक समय में नगरों में ही नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी एकल परिवारों की संख्या बढ़ने लगी है। वैश्वीकरण ने एक ओर जहाँ रोजगार के अवसरों में वृद्धि की है तो वही दूसरी ओर रोजगार पाने में प्रतिस्पर्द्धा भी बढ़ाई है। लोग रोजगार के अवसरों की तलाश में शहरों एवं महानगरों की ओर पलायन कर रहे, जिससे संयुक्त परिवारों का विखण्डन बढ़ रहा है। भारत की बहुत बड़ी जनसंख्या कृषि एवं उससे सम्बन्धित व्यवसायों में लगी है। कृषि आय से परिवारों की बढ़ती आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पा रही है, जिससे पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव बढ़ रहा है। पश्चिमीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय समाज को प्रभावित किया है। यहाँ शिक्षा, विज्ञान एवं व्यवहार में परिवर्तन हुए हैं। व्यक्तिवादी एवं पूंजीवादी विचारधारा का जन्म हुआ है। व्यक्ति अपने विकास के बारे में सोचता ही नहीं बल्कि निरन्तर प्रयास भी करने लगा है। महिलाओं की शिक्षा में निरन्तर वृद्धि हो रही है। वे न केवल रोजगार कर रही है बल्कि अपने परिवारों का खर्च भी चलाने में सक्षम हो रही हैं। ऐसी स्थिति में संयुक्त परिवार में रहना आसान नहीं रहा है। महिलाओं का संयुक्त परिवार में रहने के प्रति उदासीनता बढ़ रही है। इससे एकल परिवारों की संख्या बढ़ रही है।

संयुक्त परिवार का अर्थ :

संयुक्त परिवार उस परिवार को कहते हैं, जिसमें कई पीढ़ियों के सदस्य एक साथ रहते हों, एक रसोई हो, जिनकी एक आर्थिक कार्य–प्रणाली हो और, जो परस्पर रक्त सम्बन्धों से बँधे हो। प्रसिद्ध समाजशास्त्री कपाड़िया और आई० पी० देशाई ने विभिन्न पीढ़ियों के एक साथ रहने का अर्थ यह लगाया है कि उसके पारिवारिक सम्बन्ध में आत्मीयता एवं प्राथमिक भावनाओं की गहराई

हो। भारतीय समाज में इस प्रकार का संयुक्त परिवार व्यापक रूप से प्रचलित है। ऐसे परिवार में दादा–दादी, चाचा–चाची तथा चचेरे भाई बहनों जैसे कई पीढ़ियों के लोग एक साथ रहते है। संयुक्त परिवार की पूरी सत्ता परिवार के मुखिया के हाथो में केन्द्रित होती है, जिसे कर्ता कहा जाता है।[1]

शोथ उद्देश्य :

1. संयुक्त परिवार के विखण्डन के कारणों का अध्ययन करना।
2. संयुक्त परिवार पर वैश्वीकरण, संस्कृतिकरण एवं आधुनिकीकरण के प्रभावों का अध्ययन करना।
3. संयुक्त परिवार के विखण्डन में आर्थिक एवं सामाजिक कारकों की भूमिका का अध्ययन करना।
4. घटते पारिवारिक सम्बन्ध एवं बढ़ते तनाव के कारणों का अध्ययन करना।
5. शिक्षा एवं रोजगार के संयुक्त परिवार पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
6. संयुक्त परिवार के विखण्डन में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन करना।

तथ्य संकलन स्रोत :

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन में द्वितीय तथ्यों का उपयोग किया गया है। प्रमुख स्रोतों में पुस्तकें, पत्र, पत्रिकाएँ, न्यूज पेपर, शोध पत्रों एवं सरकारी वेबसाइटों आदि के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

साहित्य अवलोकन :

भसीन, हिमानी (2016)[2] ने अपने अध्ययन में पाया कि वर्तमान समय में आधुनिकीरण के प्रभाव के कारण संयुक्त परिवारों में विखण्डन बढ़ रहा है। एकल परिवारों के प्रति लोगों का रुझान बढ़ रहा है। पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव संयुक्त परिवारों पर पड़ रहा है, जिससे संयुक्त परिवारों का विखण्डन बढ़ रहा है। कुमारी, सुमन (2020)[3] ने संयुक्त परिवार का स्वरूप एवं परिवर्तन की प्रवृत्ति का अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि संयुक्त परिवार के स्वरूप में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। इसके पीछे अनेक ऐसी प्रवृत्तियाँ है, जिनके कारण समस्याएं बढ़ रही है। व्यक्तिवादी विचार–धारा तेजी से बढ़ रही है। लोगों की विचारधारा एकल परिवार के पक्ष में बढ़ रही है। सेलुकर, ज्योति सुभाष (2018)[4] ने संयुक्त परिवार पर आधुनिक प्रभावों का अध्ययन किया तथा अपने पेपर में यह जानने का प्रयास किया कि ऐसे कौन से कारण है जो संयुक्त परिवार को प्रभावित कर रहे हैं। इसमें पाया कि सबसे बड़ा परिवर्तन वैचारिक तनावों का बढ़ना है, जिसके कारण संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है। पारस, हेमलता (2023)[5] में पारिवारिक संरचना में होने वाले परिवर्तनों का विश्लेषण किया। अपने विश्लेषण में पाया कि संयुक्त परिवार की संरचना को वैवाहिक सम्बन्धों में

तनाव, विवाह विच्छेदों का बढ़ना एवं लिव इन रिलेशन की नई परम्परा नकारात्मक प्रभाव डाल रही है। हंसदा, दिव्या (2023)[6] ने पारिवारिक संरचना में परिवर्तन से बच्चों पर पड़ रहे प्रभावों का विश्लेषण किया और पाया कि संयुक्त परिवार अब एकल परिवारों में परिवर्तित हो रहे हैं। इससे बच्चों में संस्कारों एवं समाजीकरण में परिवर्तन हो रहे है। पीढ़ी–दर पीढ़ी संस्कारों का हस्तान्तरण नहीं हो पा रहा है। इससे बच्चों का भविष्य प्रभावित हो सकता है। जाट, राम फूल (2017)[7] ने परिवार एवं विवाह संस्था पर वैश्वीकरण का प्रभाव एवं युवा दृष्टिकोण का अध्ययन किया और पाया कि वैश्वीकरण का संयुक्त परिवारों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। शिक्षा एवं रोजगार बढ़ने से व्यक्तिवादी विचारधारा अधिक प्रभावशाली हो रही है। दोद्दामनी, के० एन० (2014)[8] ने एक समाजशास्त्रीय अध्ययन किया और पाया कि संयुक्त परिवार की संरचना में परिवर्तन हो रहे हैं। वैश्वीकरण के प्रभाव से एकल परिवारों की संख्या बढ़ रही है। राना, रोहिनी (2024)[9] ने अपने पत्र में भारत में 'हिन्दू संयुक्त परिवारों के विखण्डन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव', का अध्ययन किया। इसमें पाया कि वैश्वीकरण एवं आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण एक ऐसी संस्कृति का विकास हो रहा है, जिसमें युवा विचारधारा एवं मूल्यों को अपना रहे हैं।

संयुक्त परिवार पर वैश्वीकरण एवं आधुनिकीकरण का प्रभाव :

विकास की तीव्र गति ने जहाँ समाज की संरचना को परिवर्तित किया है तो वही संयुक्त परिवार प्रणाली पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। वैश्वीकरण एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है, जिसकी शुरुआत मैक्लुहान ने 1960 में की थी। वैश्वीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जो सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्तरों पर विश्व को जोड़ती है। वैश्वीकरण के कारण बाजारों एवं उत्पादों के निर्माण की प्रक्रिया तीव्रगति से बढ़ी है। समाज की बढ़ती आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के वस्तुओं का व्यापक पैमाने पर उत्पादन किया। इससे उपभोक्तावादी प्रवृत्ति भी तीव्र गति से बढ़ी। मीडिया और संचार के क्षेत्र में मोबाइल, नेट बैंकिंग, इण्टरनेट के संसाधनों ने क्रान्ति ला दी। वैश्वीकरण के कारण पर्यटन एवं यात्राओं को प्रोत्साहन मिला, जिससे संस्कृति पर ग्रहण की प्रक्रिरण तीव्र हुई। वैश्वीकरण एवं औद्योगीकरण के कारण अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनियों का जन्म हुआ। इससे नवीन रोजगार के अवसरों का सृजन हुआ है। वैश्वीकरण के कारण ही नगरीकरण की प्रक्रिया बढ़ने लगी है। रोजगार की तलास में जहाँ छोटे शहरों के व्यकि बड़े शहरों की ओर पलायन किये तो वही ग्रामीण क्षेत्रों के लोग शहरों की ओर पलान किये हैं। पलायन बढ़ने का सबसे बड़ा कारण बढ़ती परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करना रहा है। घटती कृषि भूमि एवं बढ़ती कृषि लागत के कारण कृषक परिवार आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहे है। परिवार की बढ़ती आवश्यकताओं की पूर्ति कृषि आय से अब सम्भव नहीं रही है, इसके कारण संयुक्त परिवारों का विकास प्रभावित हो रहा है। परिवार के सदस्यों के बीच तनाव बढ़ रहा है जो संयुक्त परिवार के विखण्डन को बड़ा रहा है।

पश्चिमीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें पश्चिमी संस्कृति, सभ्यता एवं विचारधार को अपनाया जाता है। अंग्रेजों ने भारत पर 150 वर्षों से अधिक राज किया, जिसके फलस्वरूप भारतीय समाज और संस्कृति में अनेक परिवर्तन हुए। इसने प्रौद्योगिकी संस्थाओं, विचारधारा और मूल्य आदि विभिन्न स्तरों पर होने वाले परिवर्तनों को आत्मसात किया है। पश्चिमीकरण के प्रभाव से नगरीकरण, शिक्षा एवं नवीन मूल्यों का उदय हुआ है। पश्चिमीकरण का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों में अधिक पड़ा है। इसका प्रमुख कारण यह था कि शहरी लोग अधिक पढ़े–लिखे थे। उन्होंने शिक्षा, संस्कृति, व्यवहार एवं विचारधारा को अपनाया। विवाह संस्था में परिवर्तन हुआ। अन्तर्जातीय विवाहों की संख्या धीरे–धीरे बढ़ने लगी। जातीय बन्धन भी कमजोर पड़ने लगे। इससे संयुक्त परिवार की संरचना पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। प्रेम विवाहों एवं अन्तर्जातीय विवाह करने वाले व्यक्ति एकल परिवार में रहने लगे। इससे व्यक्तिवादी विचारधारा को प्रोत्साहन मिला। व्यक्ति अपने विकास के बारे में जागरूक हुआ। परिवार की जिम्मेदारियों को निभाने में उदासीनता बढ़ती गई।[10]

संस्कृतिकरण की प्रक्रिया ने जहाँ प्रस्थिति गतिशीलता को बढ़ाया है तो वही सांस्कृतिक परिवर्तनों को भी जन्म दिया। यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें छोटी जातियाँ अपने से उच्च जातियों के व्यवहार एवं खान–पान, वेश–भूषा को अपनाती हैं। ऐसा व्यवहार एक से तीन पीढ़ियों तक करने के बाद अपने आपको उच्च जाति में सम्मिलित होने का दावा करने लगती है। इससे समाजिक संस्थाओं में परिवर्तन होता है। सामाजिक मूल्यों, प्रतिमानों, जाति–प्रथा एवं व्यवहारों को अपनाने में उदारता आई है। इससे संयुक्त परिवार को संगठित करने वाले भावनात्मक सम्बंधों में उदासीनता बढ़ने लगी। इस प्रकार से संस्कृतिकरण की प्रक्रिया ने भी संयुक्त परिवारों की संरचना पर नकारात्मक प्रभाव डाला।[11]

आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को परिभाषित करना कठिन है, फिर भी यहाँ बताया जा रहा है कि आधुनिकता किस प्रकार से समाज को प्रभावित कर रही है। देखा जाये तो आधुनिकता का सम्बन्ध एक खास तरह के अनुभव एक विशेष प्रकार की संस्कृति से है, जिसमें वास्तविकता से अधिक दिखावा है। इसमें आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक गठबन्धन होता है, जो इसे एक पृथक पहचान देता है। आधुनिकता में सांस्कृतिक एकाधिकता होती है, अनेक जातियाँ, भाषाएँ और संस्कृति क्षेत्र होते हैं। आधुनिकता में लचीलापन होता है और यह हमेशा नये आविष्कारों में जुटी रहती है।[12] आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण व्यक्तियों में अच्छी शिक्षा, चिकित्सा एवं सामाजिक सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ रंही हैं। आधुनिक समय में व्यक्ति अपने रोजगार या पेशा से सन्तुष्ट नहीं है। वह चाहता है, ऐसा रोजगार जिसमें काम कम करना पड़े और पैसा अधिक मिले। व्यक्तियों के पास समय का अभाव बढ़ रहा है। वे अपने परिवार को समय नहीं दे पा रहे है, जिससे परिवारिक सम्बन्धो में दूरिया बढ़ती जा रही है। रोजगार के अवसर बढ़ने से, महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ने लगी है। जब महिलाएँ किसी प्रकार के रोजगार से जुड़ती है तो फिर उनके पास पारिवार

की देखभाल करने का समय नहीं बचता है। ऐसी स्थिति में संयुक्त परिवारों में तनाव बढ़ता है। महिलाएँ अपनी आय को परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं में खर्च नहीं करना चाहती बल्कि भविष्य के लिए संचित करना चाहती है।

समाज में दिखावे की संस्कृति बढ़ रही है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने विकास को प्रदर्शित कर रहा है। इससे समाज में प्रतिस्पर्द्धा बढ़ रही है। सभी व्यक्ति अधिक से अधिक पूंजी का संचय करना चाहते है। नवविवाहित दम्पत्ति संयुक्त परिवार में एक वर्ष से अधिक रहना नहीं चाहते है। वे एकल परिवार में रहना पसन्द कर रहे है तथा अधिक से अधिक अपने विकास पर ध्यान देना चाहते हैं। इस प्रकार से देखा जाये तो आधुनिकीकरण संयुक्त परिवार की संरचना को विखण्डित करने का कार्य कर रहा है।

निष्कर्ष :

वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण एवं संस्कृतिकरण के प्रभाव से संयुक्त परिवार की संरचना परिवर्तित हुई है। विभिन्न शोध–पत्रों के निष्कर्ष यह बताते हैं कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से जहाँ समाज का विकास बढ़ा है तो वहीं संयुक्त परिवार पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। महिलाओं की बढ़ती शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों ने संयुक्त परिवार के सम्वन्धों में तनाव के साथ–साथ भावनात्मक उदासीनता को बढ़ावा दिया है। महिलाओं की आत्मकेन्दित विकास की भावना भी संयुक्त परिवार का विखण्डन बढ़ा रही है। युवाओं की संयुक्त परिवार के प्रति उदासीनता बढ़ती जा रही है। आत्मकेन्द्रित संस्कृति का विकास हो रहा है जो एकल परिवारों की पक्षधर है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. सिंह, जे. पी. (2005) 'समाजशास्त्र अवधारणाएँ एवं सिद्धान्त' प्रकाशक, पेंटिस हाल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पृ. 226

2. Bhasin, Himani (2016) change in Family Structure in the Modern Times', Intrnational Journal of India Psychology, http://www-ijip-in, july-Septomber.

3. कुमारी, सुमन (2020) : 'संयुक्त परिवार का स्वरूप एवं परिवर्तन की प्रवृत्ति, International journal of Political science and Grovernance- www. Journal of political science.com

4. Selukar jyate Subhash (2018). Impact of Modernization on joint Family', International journal of Research im social science. http:// www-ijmra.us

5. पारस, हेमलता (2023): 'वर्तमान परिदृश्य में पारिवारिक संरचना का परिवर्तित स्वरूप : एक

विश्लेषण, International journal for multidisciplinary Research www.isfmr.com

6. कोईराला, उर्वशी व हंसदा, दिव्या (2025): 'पारिवारिक संरचना में परिवर्तन से बच्चों पर पड़ रहे प्रभावों का विश्लेषण', International journal of Home Science, www-homescience journal.com

7. जाट, रामफूल (2017) : परिवार एवं विवाह संस्था पर वैश्वीकरण एवं युवा दृष्टिकोण, International Journal of Home Science, www-homescience journal.com

8. Doddamani, K. N. (2014). A sociological study on changing family structure in Karnataka & IOSR journal of humenties and social science www. iosr.journal

9. Rana, Rohini (2024) Impact of Modernizatadan on the Hindu joint family system in India.International Journal of creative Research Thoughts, www.ijrt.org

10 नागला, बी. के. (2015): 'भारतीय समाजशास्त्रीय चिन्तन' रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ. 360

11. श्रीनिवास, एम. एन. (2011) 'आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन' राजकमल प्रकाशक, इलाहाबाद, पृ. 52

12. दोषी, एस. एल. (2005) : आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव–समाजशास्त्रीय सिद्धान्त रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. 8

13. कापडिया, के. एम.: (2018): 'भारत वर्ष में विवाह एवं परिवार' प्रकाशक, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृ. 254

14. रावत, हरिकृष्ण (2021) 'सामाजिक शोध की विधियाँ' रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।